International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 3; March 2017; Page No. 256-258

भारत और आसियान

Mamta Jangir
Assistant Professor, PG Department of Political Science, DAV College, Abohar, Punjab, India

सारांश
दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ यानी आसियान 8 अगस्त 1967 को बना 10 राष्ट्रों का समूह है। पिछले दो दशकों में आसियान–भारत संबंधों ने कई मुकाम हासिल किये है। भारत अपनी विदेश नीति में 'लुक ईस्ट' विदेश नीति का पहला पड़ाव पार करते हुए 'एक्ट एशिया' विदेश नीति के पड़ाव में प्रवेश कर चुका है, 'एक्ट एशिया' नीति स्वतंत्रता के बाद की सबसे सफल विदेश नीति की अवधारणा बन गयी है। वर्ष 1992 में भारत आसियान का 'सेक्टरल डायलॉग पार्टनर और 1996 में पूर्ण डायलॉग पार्टनर बना। भारत 2005 में पूर्व एशिया सम्मेलन में शामिल हुआ। दोनों पक्षों ने 2012 में सामरिक सयोग समझौते पर हस्ताक्षर किया। अब आसियान और भारत सिर्फ सामरिक सहयोगी ही नहीं है बल्कि उन्होनें आपसी व्यापार को भी कई गुणा बढ़या है। आसियान के 10 देश और उसके छह सहयोगी चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और भारत एक क्षेत्रीय मुक्त व्यापार समझौते को हकीकत बनाने के दिशा में साथ मिल कर काम कर रहे है। भारत के चीन समेत अन्य देशों के साथ आगे बढ़ने से इस समझौते की सफलता इस क्षेत्र में आपसी सहयोग को संघन बनायेगी।

मुख्य अंश: भारत की विदेश नीति, आसियान, भारत आसियान वार्ता

प्रस्तावना
आसियान दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों का एक समूह है, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और अपने क्षेत्रों में स्थिरता स्थापित करने के लिए काम करता है । आसियान के जरिये भारत बहुत से देशों से संवाद कायम कर सकता है और इसके जरिये अपने नजरिये को दुनिया के सामने रख सकता है। भारत की यही कोशिश है क्योंकि भारत–आसियान को लेकर द्विपक्षीय महत्व का यह सबसे महत्वपूर्ण बिंदू है। 1992 से पूर्व में भी भारत की सक्रियता में आसियान महत्वपूर्ण रहा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंहा राव ने 'लुक इस्ट' नीति की शुरूआत की थी जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक्ट इस्ट' का नया नाम दिया है। भारत और आसियान के कार्यकारी सहयोग गहरे और विस्तृत हुए हैं। क्षेत्रों के संदर्भ में आसियान भारत सहयोग में, व्यापक क्षेत्र शामिल किए गए हैं जैसे व्यापार, निवेश, पर्यटन, मानव संसाधन विकास, विज्ञान एवं तकनीक तथा जनता का जनता से संपर्क आदि। अभिनव रूप से इस सहयोग में कुछ अन्य क्षेत्र भी शामिल किए गए हैं जैसे स्वास्थ्य परिवहन और आधारभूत संरचना, लघु और मध्यम आकार के उधम, सूचना और संचार प्रौदृयोगिकी तथा कृषि। आसियान–भारत सहयोग की अधिक परियोजनाएं विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र मे है।
भू–राजनीतिक महत्व के लिहाज से देखें, तो भी दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों में अपना प्रभाव बढ़ाये बिना भारत के लिए अंरतराष्ट्रीय मंचों पर एक शक्ति के रूप में उभरना मुमकिन नहीं है। भारत ही क्या, किसी भी देश के लिए एक बड़ी शक्ति होने का अर्थ है कि तमाम महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उसका प्रभाव बहुत दमदार हो। हालांकि इसमें कुछ चुनौतियां है, जैसे चीन का अडंगेबाजी, लेकिन उससे निबटने का भी यही रास्ता है कि भारत आसियान के जरिये बाकी सारे देशों से अपने संबंधों को प्रभावी रूप से मजबूत बनाये।

शोध उद्देश्य
1. भारत और आसियान के संबंधो के यथार्थता को परखना।
2. भारत की विदेश नीति की पड़ताल।
3. भारत की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीति की सार्थकता को परखना।

शोध प्रश्न
1. भारत की लुक ईस्ट व एक्ट ईस्ट नीति ने भारत के विकास में कितना योगदान दिया हैं
2. क्या आशियान सही मायने में भारत के विकास में सहायक हुआ है।

आसियान का निर्माण
आसियान का पूरा नाम दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ है। यह इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस सिंगापुर, थाईलैंड का एक प्रादेशिक संगठन है। 1967 दक्षिणी पूर्वी एशिया के पांच देशों ने क्षेत्रीय सहयोग के उद्देश्य से आसियान नामक एक असैनिक संगठन का निर्माण किया और 8 अगस्त 1967 को एक संधि पत्र का हस्ताक्षर कर इसके निर्माण की औपचारिक घोषणा की। बाद में वियतनाम, कंबोडिया, म्यांमार, बुनेई एवं लाओस संगठन के सदस्य बन गए है। आसियान राष्ट्रों का सकल क्षेत्रफल 4.44 मिलियन वर्ग किमी. है और इसके सदस्य राष्ट्रों की सम्मिलित आबादी लगभग 625 मिलियन है जो कि विश्व जनसंख्या का लगभग 8.8 प्रतिशत है। आसियान देशों का 2.39 ट्रिलियन डॉलर का सकल घरेलू उत्पाद है जो उच्चतर विकास मार्ग पर अग्रसर है।

भारत की पूर्व की ओर देखो की विदेश नीति और भारत आसियान संबंध
पूर्व की ओर देखो नीति – भारत सरकार द्वारा 90 के दशक के प्रारभ में अपनाई गई वह नीति जिसके तहत भारत की विदेश नीति में भारत के पूर्वी तथा दक्षिण–पूर्वी पड़ोसी देशो के साथ सम्बन्धों को अधिक मजबूत करने पर जोर दिया गया है। इस नीति के तहत इस तथ्य को ध्यान में रखा गया है कि भारत के सम्बन्ध इन पूर्वी तथा दक्षिण–पूर्वी देशों से ऐतिहासिक काल से रहे है तथा भारत इस क्षेत्र के देशों में सांस्कृतिक, व्यापारिक तथा वाणिज्यिक सम्बन्ध हमेशा से मजबूत रहे है। पूर्व की ओर देखो नीति का मुख्य आधार आर्थिक सम्बन्ध है तथा 1991 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने इस नीति की रूप रेखा तैयार कर यह कोशिश की थी कि भारत को अपने आर्थिक विकास के लिए कैसे अधिक

विकसित देशों का सहारा मिल सकता है। यहां प्रारंभ में देश की मंशा यह थी कि आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर पहले अपने पड़ोसी पूर्वी तथा दक्षिण–पूर्व के उन एशियाई देशों से मजबूत आर्थिक सम्बन्ध सुनिश्चित किए जाएं, जो आर्थिक रूप से अधिक समृद्ध है– जैसे सिंगापुर। फिर पश्चिम के समृद्ध देशों जैसे अमेरिका को इस कड़ी में जोड़ा जाये। लेकिन इस नीति का निर्माण करते समय भारत को यह समझ में आ गया कि एशिया के पूर्वी तथा दक्षिण–पूर्वी देशों के साथ मजबूत आर्थिक सम्बन्ध भारत को लम्बे समय तक लाभ दिलाते रहेंगे। यह भी समझा गया कि भारत के इस क्षेत्र के देशों से पुराने सम्बन्धों के चलते इन सम्बन्धों को दीर्घ–कालीन समय के लिए सुनिश्चित करना अधिक आसान होगा। कहा जा सकता है कि पूर्व की ओर देखो नीति मुख्यतः आर्थिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर बनाई गई एक नीति थी लेकिन समय के साथ इसमें तमाम कूटनीतिक तथा सामरिक विचारधाराओं का भी सम्मिश्रण होता गया और आज पूर्व की ओर देखो नीति भारत की विदेश नीति का एक बहुमुखी व सफल हथियार है।

पूर्व की ओर देखो नीति के कुछ प्रमुख बिन्दु

इस नीति में आर्थिक सम्बन्धों पर अधिक जोर दिया गया है।

इस नीति को उस समय क्रियान्वित किया गया था जब भारत की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी।

इस नीति को बनाने में सिगांपुर के तत्कालीन प्रधानमंत्री ली कुआन यू की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

इस नीति के द्वारा भारत, चीन के पूर्व तथा दक्षिण–पूर्व एशिया में बढ़ते प्रभाव को भी नियंत्रित करना चाहता था।

इस नीति के द्वारा क्षेत्र के उन देशों से आर्थिक सम्बन्ध अच्छे करने पर जोर दिया गया है, जो मजबूत क्षेत्रीय आर्थिक शक्तियाँ बनकर उभरे थे जैसे सिंगापुर, मलेशिया आदि।

इस नीति को और विस्तार देते हुए भारत आसियान देशों से भी मजबूत आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने पर जोर दे रहा है।

यह नीति अब सिर्फ एक आर्थिक नीति नहीं रह गई है, बल्कि लगातार बदलते वैश्विक पर्यावरण में यह एक सशक्त कूटनीतिक तथा सामरिक नीति बनकर उभरी है।

भारत के लिए आसियान का महत्व

आसियान के साथ मजबूत और बहुपक्षीय संबंधों पर भारत की एकाग्रता, स्वयं 1990 के दशक के प्रारंभ में विश्व के राजनैतिक और आर्थिक उत्थान परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तनों, आर्थिक उदारीकरण की ओर भारत के स्वंय आगे बढ़ने का परिणाम हैं। भारत की आर्थिक नीति की खोज के फलस्वरूप हमारी 'लुक ईसट' नीति अस्तित्व में आई। वृहत्तर एशिया–प्रशांत क्षेत्र में आसियान का आर्थिक, राजनैतिक और सामरिक महत्व तथा व्यापार और निवेश में भारत की एक प्रमुख भागीदार बनने की क्षमता, हमारी नीति का एक महत्वपूर्ण कारक है। म्यांमार को शामिल करते हुए आसियान का पश्चिम की ओर निरंतर विस्तार, उसे हमारी सीमा तक लाया हैं। यह अब एशिया–प्रशांत केंद्रित आर्थिक धारा से भारत को जोड़ने के लिए भूसेतु प्रदान करता है जो 21वीं सदी के बाजार को साकार करेगा। आसियान, भारत की व्यवसायिक और तकनीकी क्षमता का लाभ उठाना चाहता है। भारत और आसियान के अपने सुरक्षा परिदृश्य में समानता है। इस क्षेत्र में शांति और स्थापित तथा कच्चे माल, माल और ऊर्जा आपूर्ति के निर्बाध आवागमन के लिए हिंद महासागर की सुरक्षा में हमारा महत्वपूर्ण हित है। निरंतरता बनाए रखने के लिए हम मैंकाग–गंगा–सहयोग (एमजीसी) में सक्रिय रूप से लगे हुए है जो भारत और 5 एशियाई देशों –कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, थाइलैंड और वियतनाम को एक साथ लाता है। बिम्सटेक हमारी ल्क ईस्ट नीति का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है जो नेपाल, भूटान, बंगलादेश, श्रीलंका, म्यामार और थाइलैंड को भारत के साथ लाता है। कार्यात्मक सहयोग के लिए मंच प्रदान करने के अतिरिक्त बिम्सटेक मुक्त व्यापार क्षेत्र पर भी वार्ता चल रही है।

भारत की 'एक्ट इस्ट' नीति

भारत की आर्थिक उत्थान की खोज के फलस्वरूप हमारी 'लुक ईस्ट' नीति अस्तित्व में आई। आसियान भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह हमारी 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी का हिस्सेदार है। भारत चाहता है कि इसके जरिये वह पूरे एशिया पैसिफिक आइलैंड में अपने बेहतर संबंधों को स्थापित करे। यहां सिर्फ इन्फ्रास्ट्रक्चर या व्यापारिक संबंधों की बात न हो, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों की भी बात हो। यही वजह है कि पिछले दिनों चीन में आयोजित जी–20 के शिखर बैठक में शामिल होने में पहले प्रधानमंत्री मोदी दक्षिण एशियाई देश वियतनाम गये। तब वियतनाम के साथ भारत की स्ट्रेटजिक पार्टनशिप थी। लेकिन अब आसियान को लेकर भारत की कांप्रिहेंसिव स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप है। नवंम्बर, 2014 में म्यांमार में आयोजित आसियान–भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानंमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक्ट इस्ट' नीति की घोषणा की। मोदी की लाओस यात्रा भारत आसियान संबंधों में नयी ऊर्जा देने तथा आसियान और पूर्व एशिया सम्मेलन में भारत के स्थान को फिर से रेखांकित करने के लिहाज से बहुत सफल रही है। इंफास्ट्रक्चर, जुड़ाव और व्यापार तथा निवेश के क्षेत्रों में भारत और आसियान के बीच तेजी से काम होने की उम्मीद बनी है।

भारत का आसियान के साथ व्यापार: (आकंड़े बिलियन अमेरिकी डॉलर में)

वर्ष	भारत का आयात	भारत से निर्यात	कुल
2005–06	10.88	10.41	21.29
2006–07	18.11	12.61	30.72
2007–08	22.67	16.41	39.08
2008–09	26.20	19.14	45.34
2009–10	25.80	18.11	43.91
2010–11	30.61	25.63	56.24
2011–12	42.16	36.74	78.90
2012–13	42.87	33.01	75.88
2013–14	41.28	33.13	74.41
2014–15	44.71	31.81	76.52
2015–16	39.91	25.15	65.06

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार)

भारत आसियान सम्मेलन

आसियान भारत शिखर सम्मेलन की मुख्य उपलब्धि यह रही है कि इसने दस आसियान देशों के साथ भारत को वार्षिक बैठक करने का अवसर मुहैया कराया है।

भारत – आसियान वार्षिक शिखर सम्मेलन

प्रथम	5 नंवम्बर 2002,	नॉमपेन्ह
द्वितीय	8 अक्टूबर, 2003,	बाली, इंडोनेशिया
तृतीय	29–30 नवंम्बर, 2004,	वेनटाइन
चतुर्थ	13 दिसम्बर, 2005,	मलेशिया
पंचम	14 जनवरी, 2007,	फिलीपीन्स
षष्ठ	21नवम्बर, 2007,	सिंगापुर
सप्तम्	20 अक्टूबर,	थाईलैंड
अष्टम्	अक्टूबर, 2010,	हनोई वियतनाम
नवम्	19 नवम्बर, 2011,	बाली, इंडोनेशिया
दसवां	नवम्बर 2012,	नामपेन्ह
ग्यारहवां	9–10 अक्टूबर, 2013,	बुनेई
बारहंवा	नवम्बर, 2014,	म्यांमार,
तेहरवां	21 नवम्बर, 2015	कुआलालुम्पुर
चौदहवां	8 सितम्बर, 2016	वियनतियाने, लाओस

भारत–आसियान शिखर बैठक से संबंधो में परिपक्वता आई है। शिखर बैठक से यह पता लगा कि पारस्परिक स्वीकृति से भारत–आसियान संबंधों में मजबूती आई है जो प्रगाढ़ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर टिकी है और भारत एवं आसियान, दोनो के हितों को पूरा करती है। तेजी से आगे बढ़ने की पारस्परिक इच्छा भी स्पष्ट है। भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत और विश्व मामलों में सक्रिय स्वतंत्र आसियान को हमारे साथ बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए विवश करती है। हम संबंधो की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए शिखर बैठक में किए गए प्रयासों का अनुकरण करेंगे।

निष्कर्ष

लुक ईस्ट पॉलिसी या पूर्व की ओर देखो नीति पूर्व एशियाई क्षेत्र में मजबूती करने की भारत की सामरिक आर्थिक नीतियों में से एक है। इस नीति के तहत भारत का प्रयास इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को काटना है। दूसरे शब्दो में, लुक ईस्ट पॉलिसी दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापक आर्थिक और सामरिक संबंधो को विकसित करने का प्रयास है। ताकि इस क्षेत्र में क्षेत्रीय शक्ति के रूप में खुद को स्थापित किया जा सके। इसकी शुरूआत 1991 में हुई और इसे प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव के शासन काल में विकसित और लागू किया गया। हालांकि बाद की अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह और अब मोदी सरकार ने भी इसे कड़ाई से अपनाया।

भारत के सामरिक समीकरणों में आसियान अच्छा–खासा महत्व रखता है। आसियान भारत के लिए पूर्वी एशिया की दुनिया की ओर खुलता मार्ग है जिसमें म्यांमार, भारत और इसके पूर्वी पड़ोसियों के बीच पुल की तरह है। वर्ष 2017 में वार्ता सहयोगी के रूप में भारत ने आसियान के साथ 25 वर्ष पूरे कर लिये है। चीन ने जिस तरह से भारत के पड़ोसी देशो बांगलादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल आदि में अपना दखल बढ़ाया है उसी तरह भारत को भी अपना दखल दक्षण–पूर्वी एशियाई देशों में बढ़ाने की जरूरत है। लेकिन चीन के काउंटर में हमें यह बात कतई नहीं भूलनी चाहिए कि किसी भी देश से भारत के संबंधो का अपना स्वतंत्र महत्व हो, न कि यह सब चीन के कारण हो। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के राजनैतिक, आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक संबंध अब बहुत मजबूत हो चुके है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त – चन्द्रशेखर सूद निरंजना बहुगणा।
2. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति – डा. बी. एल फड़िया – पृष्ठ संख्या 388।
3. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धान्त व व्यवहार – यू. आर. घई, एस।
4. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध– तपन बिस्वाल।
5. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त व व्यवहार – डा. पुष्पेश पन्त, श्री पाल जैन, डा. राखी पन्चोला।
6. प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर 2014।
7. राजस्थान पत्रिका 8 सितम्बर 2016।
8. दैनिक भास्कर 21 नवंम्बर, 2015।
9. http://aic.ris.org.in
10. http://www.ssgcp.com
11. http://asean.org